शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -2
Issue -2
December
2024

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

शिवा जैन
शोधार्थी (राजनीति विज्ञान)
डॉ. राहिल सत्य निधान
शोध निर्देशक
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म. प्र.)

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सांस्कृतिक पहलुओं के अध्ययन पर आधारित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 21वीं सदी की भारत की प्रथम शिक्षा नीति है। यह नीति भारतीय संस्कृति को केंद्र में रखकर देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करने का ध्येय रखती है। शिक्षा और संस्कृति का अटूट संबंध है संस्कृति समाज में पीढ़ी दर पीढ़ी सम्प्रेषण का कार्य करती है और शिक्षा संस्कृति की सर्वोत्तम वाहक होती है यह नीति प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परंपरा के आलोक में तैयार की गई है। ज्ञान, प्रज्ञा और सत्य की खोज को भारतीय विचार परंपरा और दर्शन में सदा सर्वोच्च मानवीय लक्ष्य माना जाता रहा है, जिसका सम्प्रेषण शिक्षा के माध्यम से सदैव ही परिलक्षित हुआ है, जिसके अनेक उदाहरण अस्तित्व में है, तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला और वल्लभी जैसे प्राचीन भारत के विश्व-स्तरीय संस्थानों ने अध्ययन के विविध क्षेत्रों में शिक्षण और शोध के आदर्श और ऊंचे प्रतिमान स्थापित किए थे और विभिन्न पृष्ठभूमि और देशों से आने वाले विद्यार्थियों और विद्वानों को लाभान्वित किया था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत की परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों के आधार को संरक्षित रखते हुए 21वीं सदी की शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण लक्ष्यों, जिनमें एसडीजी 4 शामिल है, जिसके संयोजन में शिक्षा व्यवस्था उसके नियमन और शासन सहित सभी पक्षों के सुधार और पुनर्गठन का प्रस्ताव रखती है।

मुख्य शब्द

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, संस्कृति, शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा।

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -2
Issue -2
December
2024

प्रस्तावना

'असतो मा ज्योतिर्गमय' अर्थात् हे माँ हमें अंधकार से ज्ञान रूपी प्रकाश की और ले चलो। इस वाक्य से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि व्यक्ति के जीवन में अंधेरे से रोशनी सिर्फ शिक्षा के माध्यम से ही संभव हो सकती है। शिक्षा प्रकाश का वह श्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ प्रदर्शन करता है। वैदिक साहित्यों में शिक्षा शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया गया है, जैसे – विद्या, ज्ञान बोध और विनय। शिक्षा शब्द का प्रयोग व्यापक और सीमित दोनों अर्थों में किया जाता है। व्यापक अर्थ में शिक्षा का तात्पर्य है व्यक्ति को सभ्य और उन्नत बनाना, इस दृष्टि से शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। हमारे पूर्वजों ने प्राचीन युग के साहित्य की विभिन्न शाखाओं के ज्ञान को सुरक्षित ही नहीं रखा अपितु अपने यथाशक्ति योगदान द्वारा उसमें निरंतर वृद्धि करके उसे मध्य युग तक भावी पीढ़ी को हस्तांतरित किया।

संस्कृति का आशय किसी राष्ट्र, क्षेत्र, समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र स्वरूप का नाम है, जो उस समाज में विचार, कार्य करने के स्वरूप में अंतर्निहित होती है। संस्कृति और समाज एक दूसरे के पर्याय हैं संस्कृति किसी समूह के समग्र व्यवहार का प्रारूप है जो, आंशिक रूप से भौतिक वातावरण प्रकृति एवं मानव दोनों द्वारा निर्मित, लेकिन प्रधानताय उसके मानक, विचारों, अभिवृतियों, मूल्यों, विश्वास, आदतों, कला , संगीत, शिक्षा, साहित्य आदि अमूर्त विरासत को समेटने का कार्य करती है।

प्राचीन काल में आचार्यों में यह भावना रही कि भारतीय साहित्य सदा जीवंत रहे। उनके परिश्रम का ही परिणाम है कि वर्तमान समय में भी हमें वैदिक साहित्य ज्यों का त्यों मिलता है। प्राचीन भारतीय संस्कृति में जो कुछ अनुपयोगी था, उसका अधिकांश इस समय तक नष्ट हो चुका है। वैदिक युग की अमितव्यापी एवं बर्बर प्रथाएं, बहुत समय हुआ, विस्मृत हो चुकी है। अन्य संस्कृतियों के प्रति भारत के ऋण के विषय में बहुत कुछ कहा जा चुका है परंतु हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि भारत ने जितना ग्रहण किया है, उससे भी अधिक उसने प्रदान किया है। भारत के प्रति विश्व के ऋण का सारांश इस प्रकार है कि संप्ररण दक्षिण पूर्व एशिया को अपनी अधिकांश संस्कृति भारत से प्राप्त हुई। ईसा पूर्व पाँचवी शताब्दी के प्रारंभ में पश्चिमी भारत के उपनिवेशी लंका में बस गए, जिन्होंने अन्त में अशोक के राज्यकाल में बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया। इस समय तक कुछ भारतीय व्यापारी मलाया, सुमात्रा तथा दक्षिण पूर्व एशिया के अन्य भागों में जाने आने लगे थे। उत्तर की और भारतीय

संस्कृति का प्रभाव मध्य एशिया से होकर चीन में फैला। भारत और चीन के मध्य संपर्क संभवतः मौर्यकल में स्थापित हुआ था।

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 29 जुलाई 2020 को अस्तित्व में आई। यह शिक्षा नीति परंपरा और आधुनिकता के मध्य समन्वय स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील है। जहां यह नीति भारत की समृद्ध विविधिता और संस्कृति के प्रति सम्मान रखते हुए और साथ ही देश के स्थानीय और वैश्विक संदर्भ में आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए भारत की भविष्य कि पीढ़ियों का मार्गदर्शन करेगी, वहीं यह नीति भारत के युवाओं को भारत देश के बारे में और इसकी विविध सामाजिक, सांस्कृतिक, और तकनीकी आवश्यकताओं सहित यहाँ की आदितीय कला, भाषा और ज्ञान परंपराओं के बारे में ज्ञानवान बनाना राष्ट्रीय गौरव, आत्मविश्वास, आत्मज्ञान, परस्पर सहयोग और एकता की दृष्टि से और भारत के सतत् ऊंचाइयों की और बढ़ने की दृष्टि से अतिआवश्यक है। आधुनिकता की दृष्टि से यह नीति अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रिय मापदंडों का पालन कर रही हैं भारत सरकार द्वारा 2015 में अपनाए गए सतत् विकास लक्ष्य के लक्ष्य 4 में परिलक्षित वैश्विक शिक्षा विकास लक्ष्य के अनुसार विश्व में 2030 तक सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्ता युक्त शिक्षा सुनिश्चित करने और जीवन पर्यंत शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए पुनर्गठित करने की आवश्यकता होगी, ताकि सतत् विकास के लिए 2030 तक लक्ष्य 4 के सभी महत्वपूर्ण लक्ष्य प्राप्त किए जा संके।

प्राचीन भारत में शिक्षा का लक्ष्य सांसारिक जीवन अथवा स्कूल के बाद के जीवन की तैयारी के रूप में ज्ञान अर्जन नहीं बल्कि पूर्ण आत्मज्ञान और मुक्ति के रूप में माना गया था। प्राचीन शिक्षा प्रणाली जिसमे विश्व स्तरीय संस्थानों के नाम नालंदा, विक्रमशिला इत्यादि की शिक्षा व्यवस्था ने महान विचारक चरक, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भास्कराचार्य, गौतम, पिंगला, पाणिनी, नागार्जुन, पतंजलि, कौटिल्य, मैत्रीय, गार्गी अनेक महान विद्वानों को जन्म दिया। भारतीय संस्कृति और दर्शन का विश्व में बड़ा सहज प्रभाव रहा है। वैश्विक महत्व की इस समृद्ध विरासत को आने वाली पीढ़ियों के लिए न सिर्फ सहेज कर संरक्षित रखने की जरूरत है बल्कि हमारी शिक्षा व्यवस्था द्वारा उस पर शोध कार्य होने चाहिए, उसे और समृद्ध किया जाना चाहिए और नए नए उपयोग भी विचार किए जाने चाहिए।

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -2
Issue -2
December
2024

शोध समीक्षा

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
- प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली
- भारतीय ज्ञान परंपरा

परिकल्पना

भारतीय ज्ञान परंपरा प्राचीन काल से संस्कृति के सृजन में सहायक रही है। वर्तमान समय की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा को संस्कृति के साथ समावेशित करने का सकारात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। शिक्षा में संस्कृति के समावेशन से भारतीय पीढ़ी को विश्व में एक अद्वितीय पहचान का अवसर प्राप्त होगा।

शोध पत्र के उद्देश्य

- आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय संस्कृति के समावेशन का अध्ययन करना।
- भारतीय संस्कृति के मूल्य, विश्वास, नैतिकता, शिक्षा के सकारात्मक पहलुओं का अध्ययन करना।
- शिक्षा को संस्कृति के सर्वोत्तम वाहक के रूप में कार्य करने के लिए परिलक्षित करना।
- भारतीय संस्कृति की विभिन्न विशेषताओं के अध्ययन का अवलोकन करना।
- शिक्षा के माध्यम से संस्कृति का विकास, नए सांस्कृतिक प्रतिमान, संस्कृति का संरक्षण, समाजीकरण द्वारा व्यक्तित्व विकास में सहभागिता का निर्माण करना।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध की प्रकृति गुणात्मक है परंतु जहां भी मात्रा की आवश्यकता हुई उक्त स्थान पर मात्रात्मक आंकड़ों का संकलन किया गया है। यह शोध द्वितीय स्त्रोतों के विश्लेषणों पर आधारित है। इसमें विचार विमर्श के माध्यम से प्राप्त निष्कर्षों का समायोजन किया गया है।

शिक्षा और संस्कृति का महत्व

शिक्षा एक सतत् प्रक्रिया है यह व्यावहारिक ज्ञान के रूप में महत्वपूर्ण हैं शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए महत्वपूर्ण तत्व है भारतीय संस्कृति में प्रत्येक प्रकार की शिक्षा का

महत्व रहा है चाहे वह चिकित्सा, विज्ञान, खगोलशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, भूविज्ञान, ज्योतिष विज्ञान, वास्तुशास्त्र, कृषि, वाणिज्य, अंकगणित, ज्यामिति आदि अनेक विषय प्राप्त होते हैं जिससे यह सिद्ध होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा एक समृद्ध, वैज्ञानिक, तकनीकी, नैतिकता, मूल्य आदि को समाहित करने वाली संस्कृति का हिस्सा है। भारतीय संस्कृति में शिक्षा का स्थान उच्च एवं प्रधान है शिक्षा संस्कृति का सर्वोत्तम उत्कृष्ट माध्यम होती है इसके द्वारा हम विविधता और स्थानीय परिवेश के लिए एक सम्मान हमेशा ध्यान में रखते है, बहु भाषी समाज में अध्ययन अध्यापन के कार्य में भाषा की शक्ति को प्रोत्साहन प्रदान करते हैं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के द्वारा समाज, समावेशन और सामाजिक आर्थिक रूप से गतिशीलता हासिल की जा सकती है इस नीति का उद्देश्य अच्छे नागरिकों का विकास करना है जो तर्कसंगत विचार और कार्य करने में सक्षम हों, जिनमे करुणा और सहानुभूति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक चिंतन और रचनात्मक कल्पनाशक्ति, नैतिक मूल्य और आधार हों।

शिक्षा का संस्कृति के संदर्भ में योगदान

- संस्कृति को पल्लवित पोषित करना उसमें प्रगति करना।
- संस्कृति की रक्षा करना।
- शिक्षा संस्कृति की प्रत्यक्ष उपज है यह केवल शिक्षा को उसके उपकरण तथा अन्य सामग्री ही प्रदान नहीं करती बल्कि उसके अस्तित्व का तार्किक आधार भी प्रदान करती है।
- संस्कृति के वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अवलोकन करना।
- नवीन सांस्कृतिक प्रतियानों का सृजन करना।
- व्यक्तित्व का विकास करना।

निष्कर्ष

शिक्षा और संस्कृति का अटूट संबंध हैं शिक्षा संस्कृति का सर्वोत्तम उत्कृष्ट माध्यम है संस्कृति के मूल्यों को यदि शिक्षा के माध्यम से नागरिकों प्रेषित किया जाए तो यह एक सभ्य, उत्कृष्ट, आधुनिक, व्यावहारिक समाज का विकास करने में सहायक हो सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य भारत को भारतीय ज्ञान परंपरा के समृद्ध विकास से परिलक्षित करना हैं क्योंकि वर्तमान समय की मांग भी वही है जो हमारी संस्कृति में पहले से ही निहित है जेसे प्रकृति प्रेम, सहनशीलता, प्रेम, सहिष्णुता, आदर भाव, मूल्य, नैतिकता आदि

अमूर्त भारतीय विरासत जिसके माध्यम से हम वर्तमान की समस्याओं का भी समाधान करने में सक्षम है हालांकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का क्रियान्वयन हमारी व्यवस्था के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, परंतु भारत एक युवा प्रधान राष्ट्र है और युवा प्रत्येक समस्या का समाधान रचनात्मक तरीके से खोजना जानते हैं यदि हम संस्कृति और शिक्षा के समायोजन से भारत की संसस्याओं को हल खोजने का प्रयत्न करते हैं तो हम निश्चित रूप से एक विकसित भारत के लिए योगदान कर सकते हैं।

संदर्भ

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय
- education.gov.in
- www.dristiias.com
- www.clearias.com
- नई शिक्षा नीति 2020 की मुख्य बातें भारत को 'वैश्विक ज्ञान महाशक्ति' बनाने के लिए एनईपी के मुख्य बिंदु, हिंदुस्तान टाइम्स।
- के.पी.एम.जी. रिपोर्ट: राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020 का प्रभाव और हित धारकों के लिए अवसर, अगस्त 2020